अमर चित्र कथा

राणा प्रताप

क्र. ५६३ | रु. ९०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : **www.ack-media.com.** अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
यग्य शर्मा	प्रताप मुलिक	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-329-5
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

भारत के पश्चिमी भाग में, राजस्थान शूरवीर राजपूतों का घर कहलाता है।

इतिहास साक्षी है कि देश की आन के लिए राजपूतों ने अनेक युद्ध लड़े।
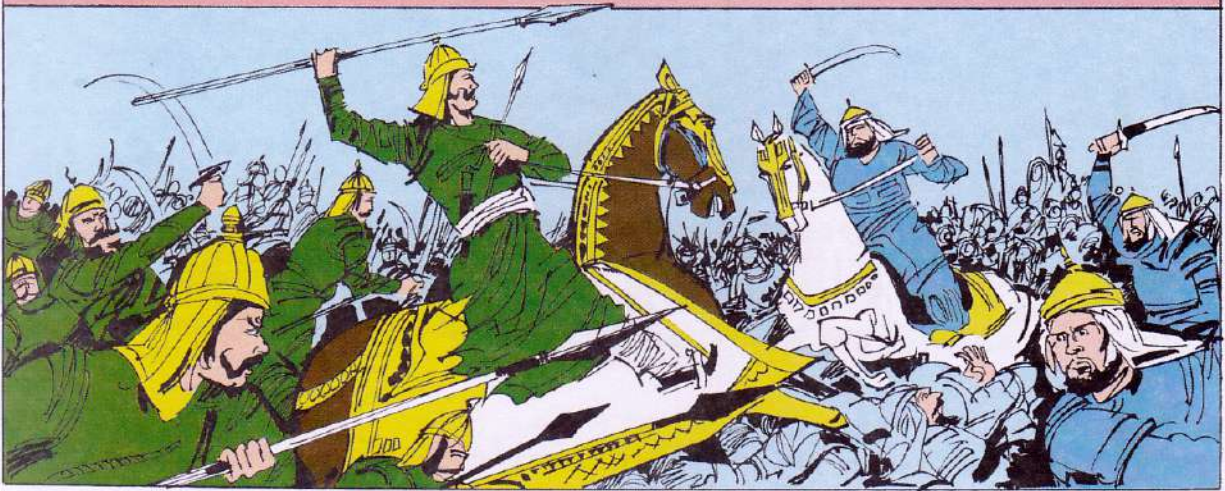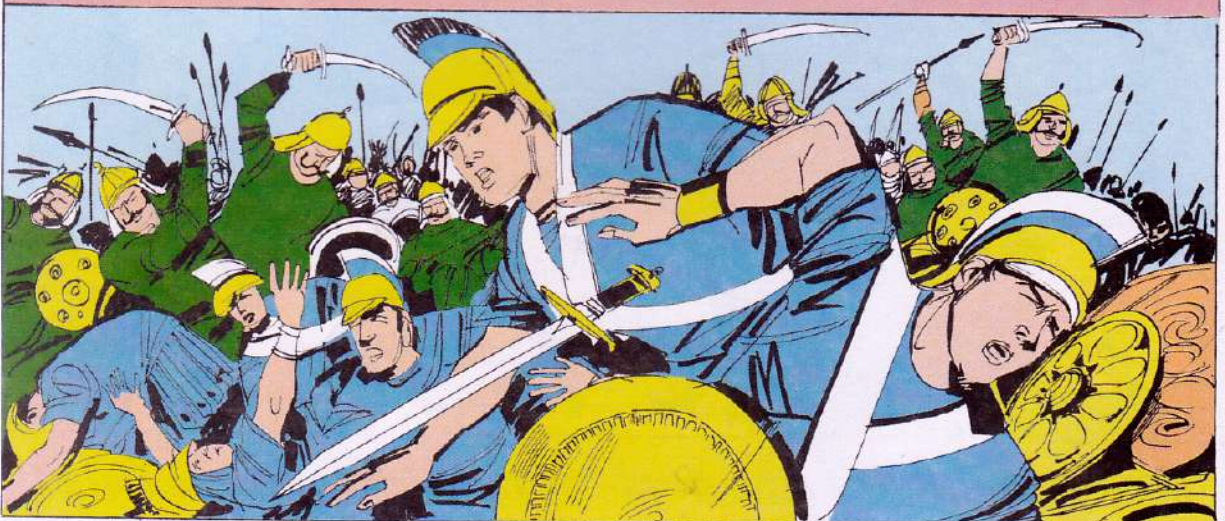
और उनकी नारियाँ भी किसी प्रकार कम न थीं। चित्तौड़ की महारानी कर्म देवी ने कुतबुद्दीन की शक्तिशाली सेनाओं को पराजित किया था।
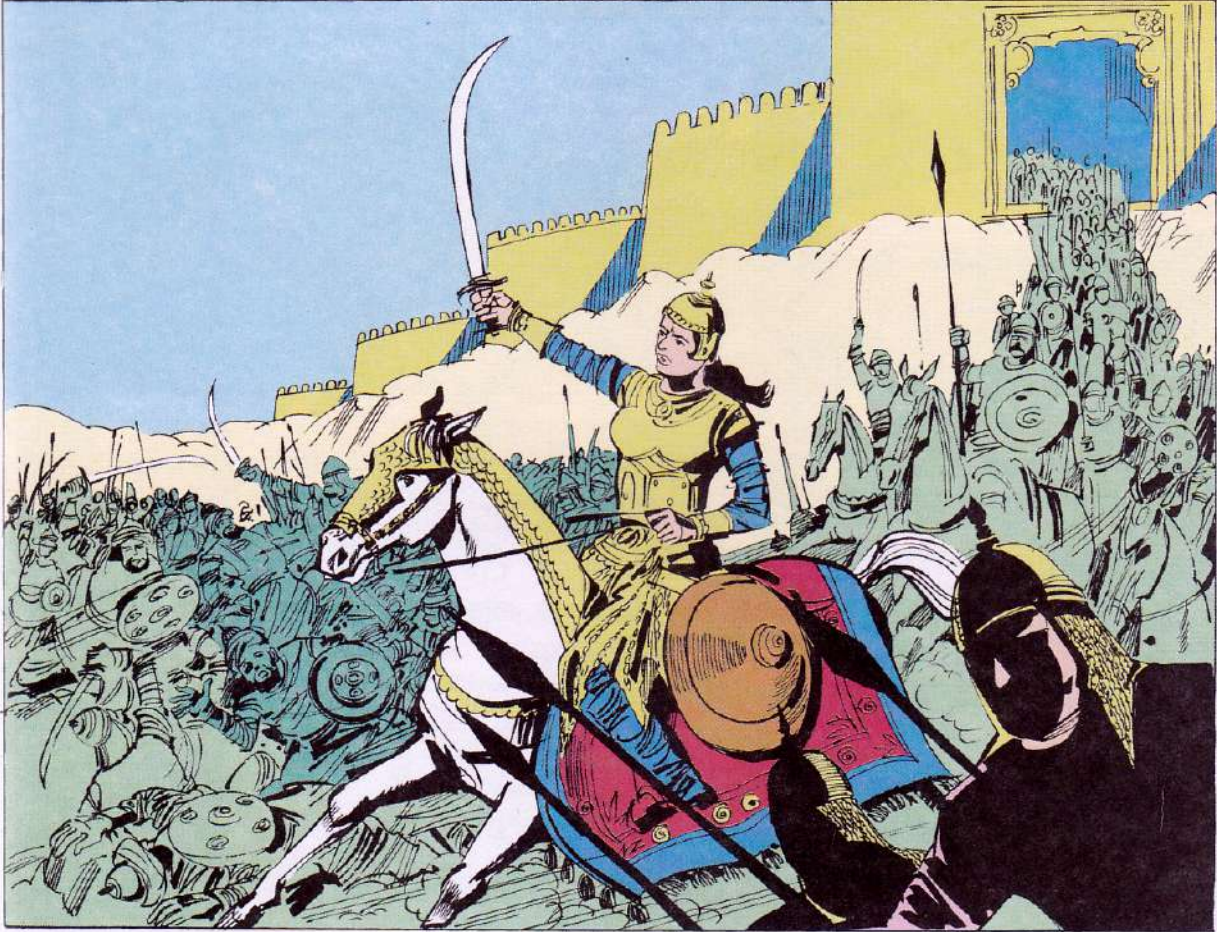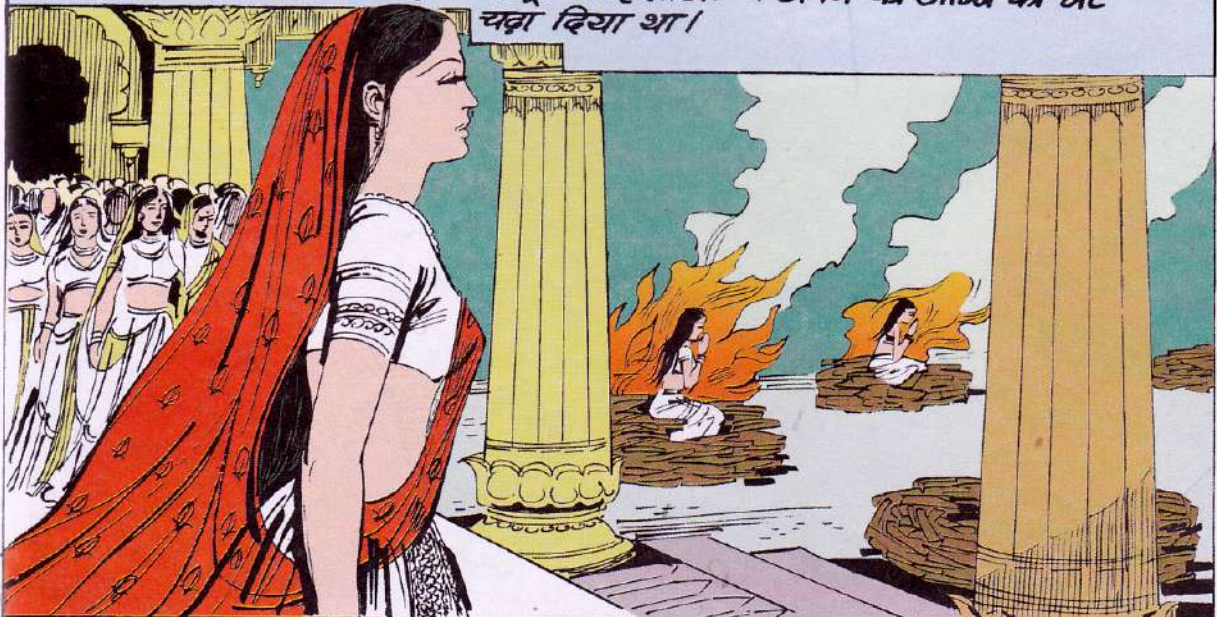
लगभग सभी उच्च राजपूत शासकों ने मुग़लों का प्रभुत्व अंगीकार कर लिया था। नहीं किया था तो केवल चित्तौड़ के राणा प्रताप ने।

माँ काली आप पर कृपा करें, राणा जी, आपने अत्यन्त कठिन व्रत लिया है।
गुरुदेव, मातृभूमि की रक्षा करना हंसी-खेल नहीं है....

....और इस महान् कार्य के लिये जो भी बलिदान देना पड़े वह कम होगा।

जब तक हमारी नसों में लहू की अंतिम बूंद शेष रहेगी हम स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहेंगे।
ठीक है, परन्तु हमारा कार्य अत्यन्त कठिन है। हमारे ही आदमी आक्रमण करने वालों की सहायता कर रहे हैं।

हमें अपनी शक्ति बढ़ानी होगी। पहले किसी महत्वपूर्ण दुर्ग पर अधिकार करना होगा।
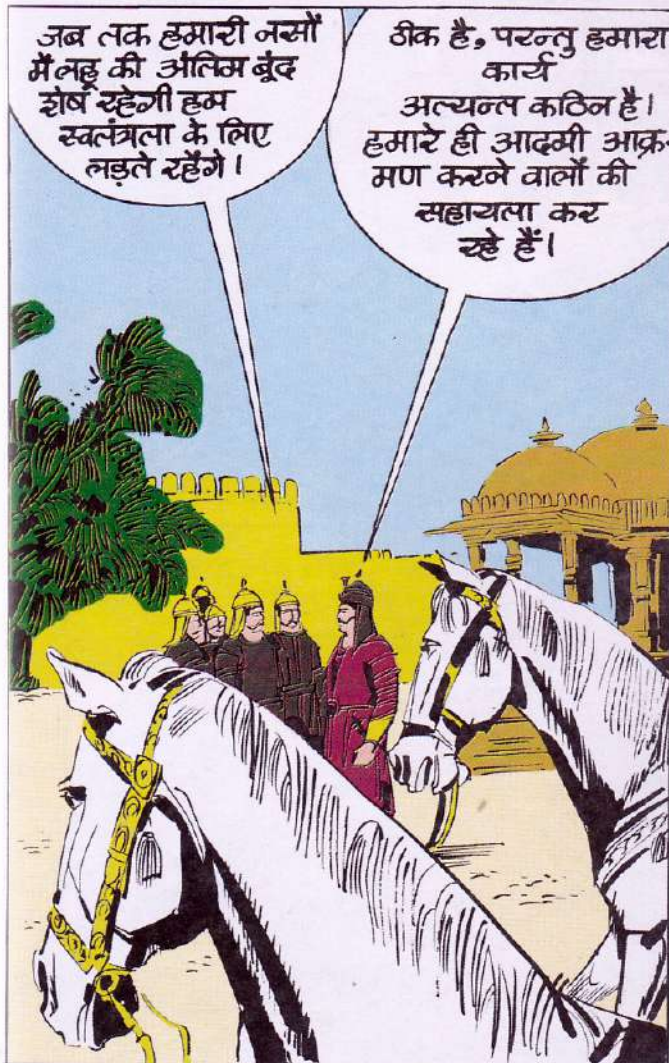
अतः राणा प्रताप के मुट्ठी भर सैनिकों ने चित्तौड़ के निकट एक दुर्ग पर आक्रमण किया जो मुग़लों के अधीन था।
हर हर महादेव!
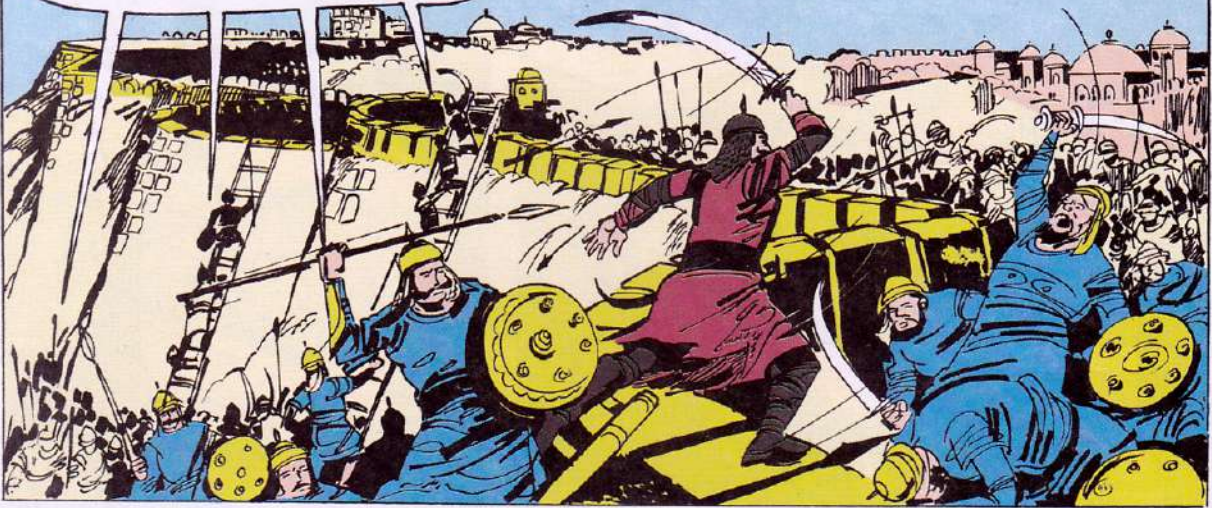
जय चण्डी!

अन्त में मुग़ल सेना पराजित हुई।
शाबाश, वीरो! क़िला अब हमारा है।
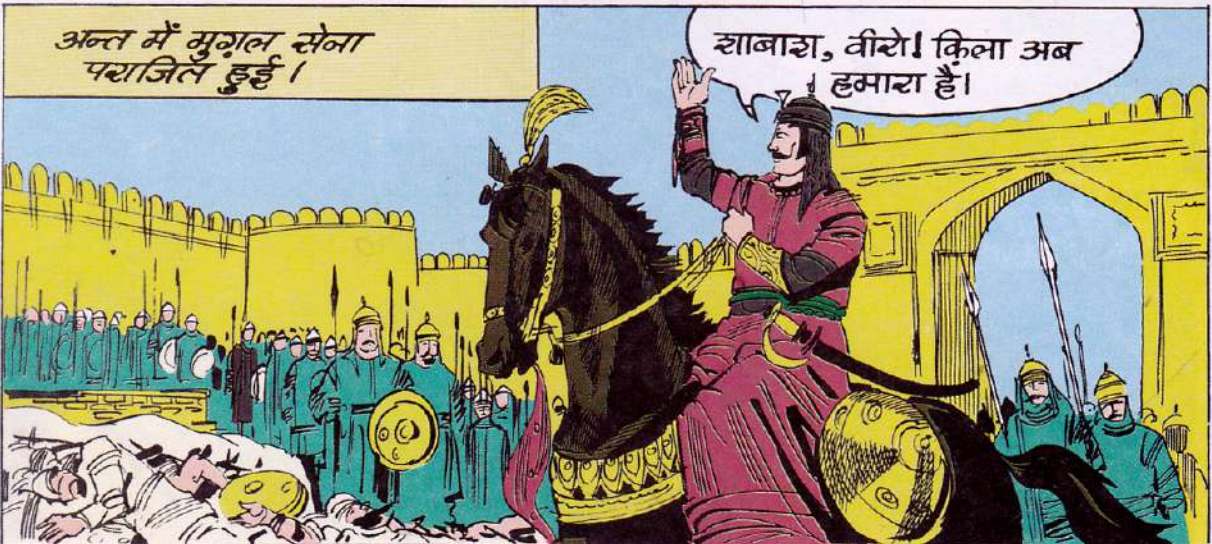
इस विजय के बाद चित्तौड़ के अनेक राजपूत किले में आकर राणा प्रताप की सेना में भर्ती हो गये।
चित्तौड़ की जनता से कह दो कि यद्यपि उन पर शासन आक्रमणकारियों का है ....

.... तथापि उनका असली शासक मैं हूँ। मेरी आज्ञा है कि जब तक हम स्वतंत्रता प्राप्त न कर लें तब तक कोई ज़मीन नहीं जोतेगा।

उधर अकबर के दरबार में—
हुज़ूर, यह मज़ाक भी सुना? प्रताप अपने को चित्तौड़ का राजा बताता है!
वह राजा तो है—लेकिन बग़ैर राज का!

ख़ामोश! भूलो मत कि प्रताप ने एक क़िला फ़तह किया है।
हुज़ूर, लेकिन हमारी विशाल फ़ौजें चुटकी बजाते उसे मसल कर रख देंगी।

तुम धोखे में हो। प्रताप को दबाना आसान नहीं है।

और राणा प्रताप के दुर्ग में—
राणा जी, यह आदमी भूमि जोत रहा था।
तुमने मेरी आज्ञा की अवहेलना क्यों की ?

मैंने मुग़ल सूबेदार से आज्ञा प्राप्त कर ली थी।
चित्तौड़ का शासक मैं हूँ— और मैंने तुम्हें आज्ञा नहीं दी।

तुम्हारी फसल शत्रु की सेना का पेट भरेगी और इस तरह उसकी सहायक होगी।

तुम्हारा कार्य मातृभूमि के हित के विपरीत है। अतः तुम्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाता है।
अगले दिन किसान को फाँसी दे दी गयी।

किसान के मृत्यु-दण्ड का समाचार अकबर ने सुना।
यह बहुत बुरा हुआ। उसे शायद अब भी मित्र बनाया जा सकता है।
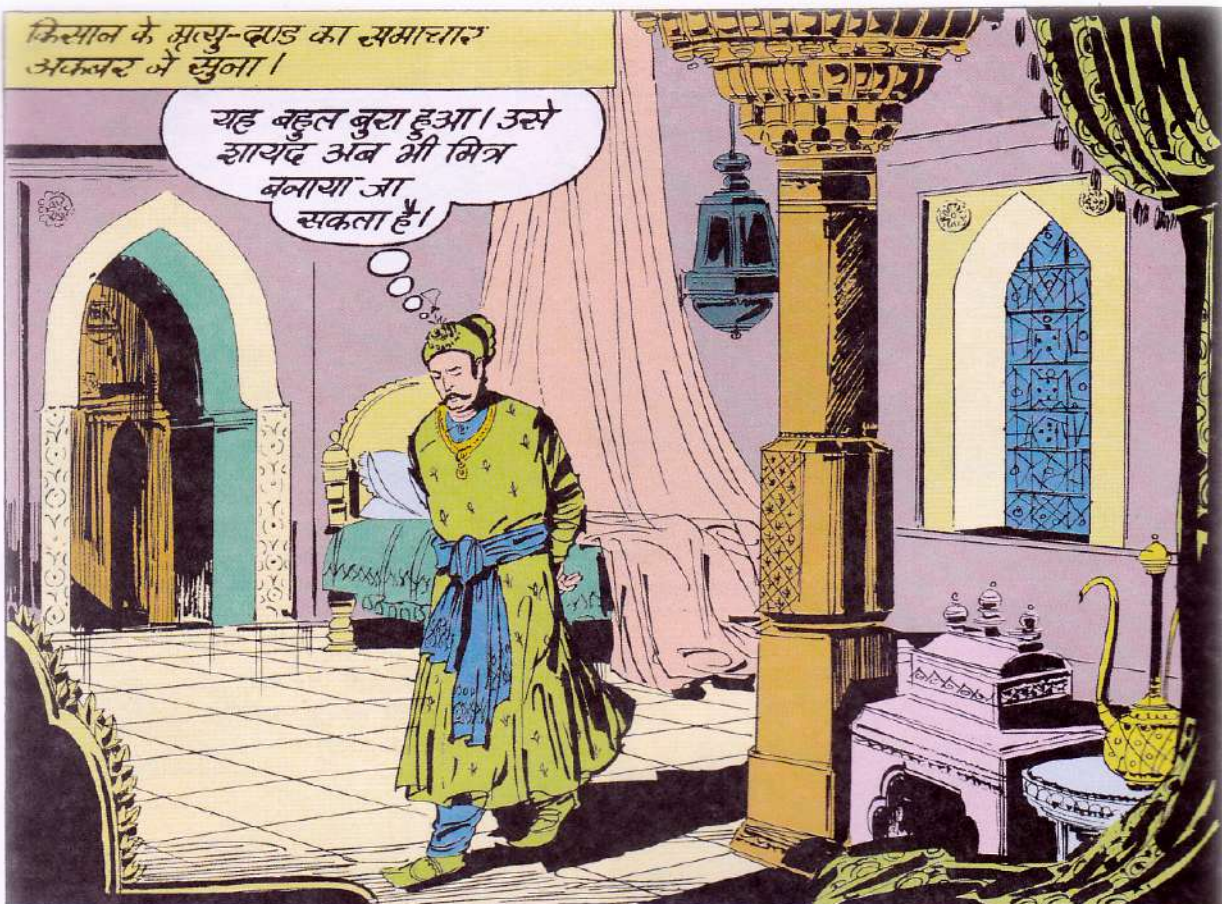
अकबर ने अपने राजपूत सेनापति, मान सिंह से सलाह की।
प्रताप जैसे बहादुर को हमारा दोस्त होना चाहिए, राजा मान सिंह! आप जा कर उसे समझाइये कि हमारे ख़िलाफ़ बलवा बन्द कर दे।
आप ठीक कहते हैं, हुज़ूर। उसकी मित्रता मुग़ल साम्राज्य के लिए बहुत लाभ-दायक साबित होगी।

राजा मान सिंह राणा प्रताप से मिलने गये। राणा के मंत्री ने उनकी आव-भगत की।
पधारिये, राजा जी।
मैं एक संदेश लाया हूँ। भारत-सम्राट अकबर राणा जी से मित्रता करना चाहते हैं।

वह आपके लिए सम्राट होगा, हमारे लिए तो आक्रमणकारी है, शत्रु है।
सम्राट का विरोध करना राजद्रोह होता है।

यह राजद्रोह नहीं है। स्वतंत्रता के लिए लड़ना हमारा परम धर्म है।

परन्तु आप यह क्यों नहीं समझते कि आप उनकी विशाल सेना को नहीं हरा सकते।
हम अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं – जीतें चाहे हारें।
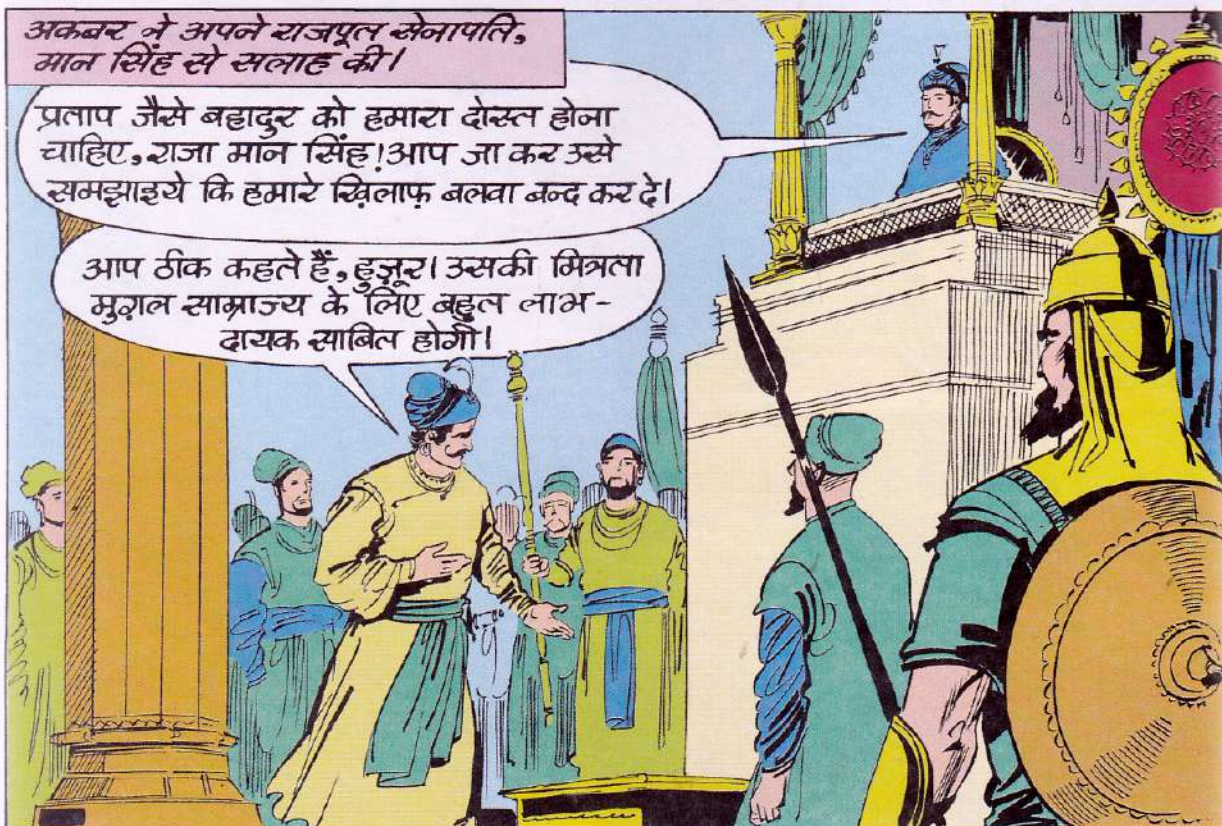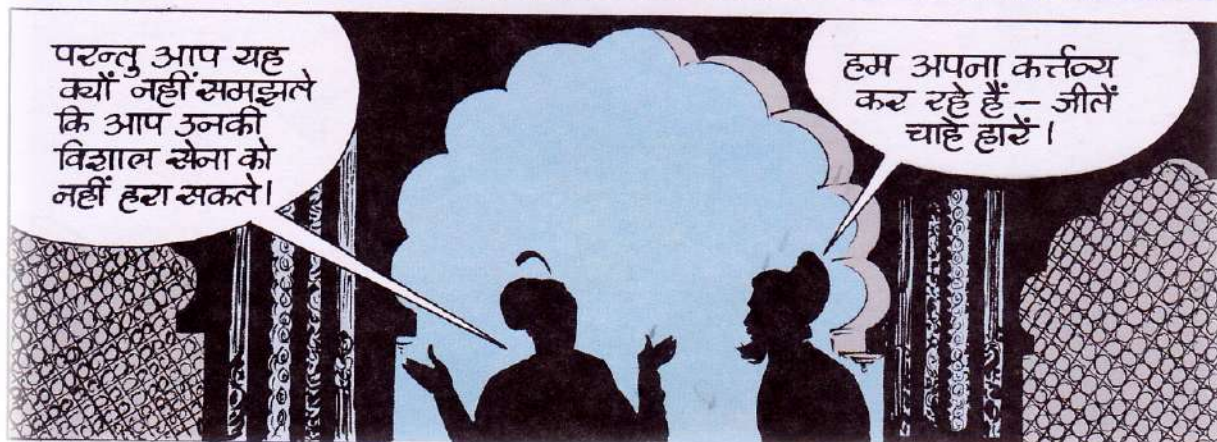
राणा प्रताप अपने पुत्र अमर सिंह के साथ वहाँ आये।
बातें बहुत हो गयीं, मंत्री जी। इस पर फिर विचार करेंगे। राजा मान सिंह भूखे होंगे। जो रूखा-सूखा हमारे पास है वह प्रस्तुत करें। अमर --
जी, पिता जी!

आप हमारे साथ भो-जन नहीं करेंगे क्या?

नहीं, आप हमारे अतिथि हैं। पहले अतिथि को ही भोजन करना चाहिए।
परन्तु गृह-स्वामी को भी अतिथि के साथ भोजन करना चाहिए।

मुझे खेद है, मैं आपके साथ भोजन नहीं कर सकता।
इसका कारण बतायेंगे?

कारण – आपने अपनी प्रतिष्ठा शत्रु के हाथ बेच दी है।
मैं मित्र बनकर आया – और आपने मेरा अपमान किया। आपको इसका बदला चुकाना होगा।
अच्छी बात है। अब भेंट युद्ध के मैदान में होगी।
मान सिंह क्रोध में भर कर प्रताप के दुर्ग से बाहर आ गये।
और अपने बहनोई अकबर को भी लड़ने के लिए साथ लेते आइयेगा।
मान सिंह की बहन अकबर को ब्याही थी।

मान सिंह के जाने के कुछ समय बाद, राणा प्रताप ने मुगल सेना की एक छावनी पर आक्रमण किया और अनेक सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
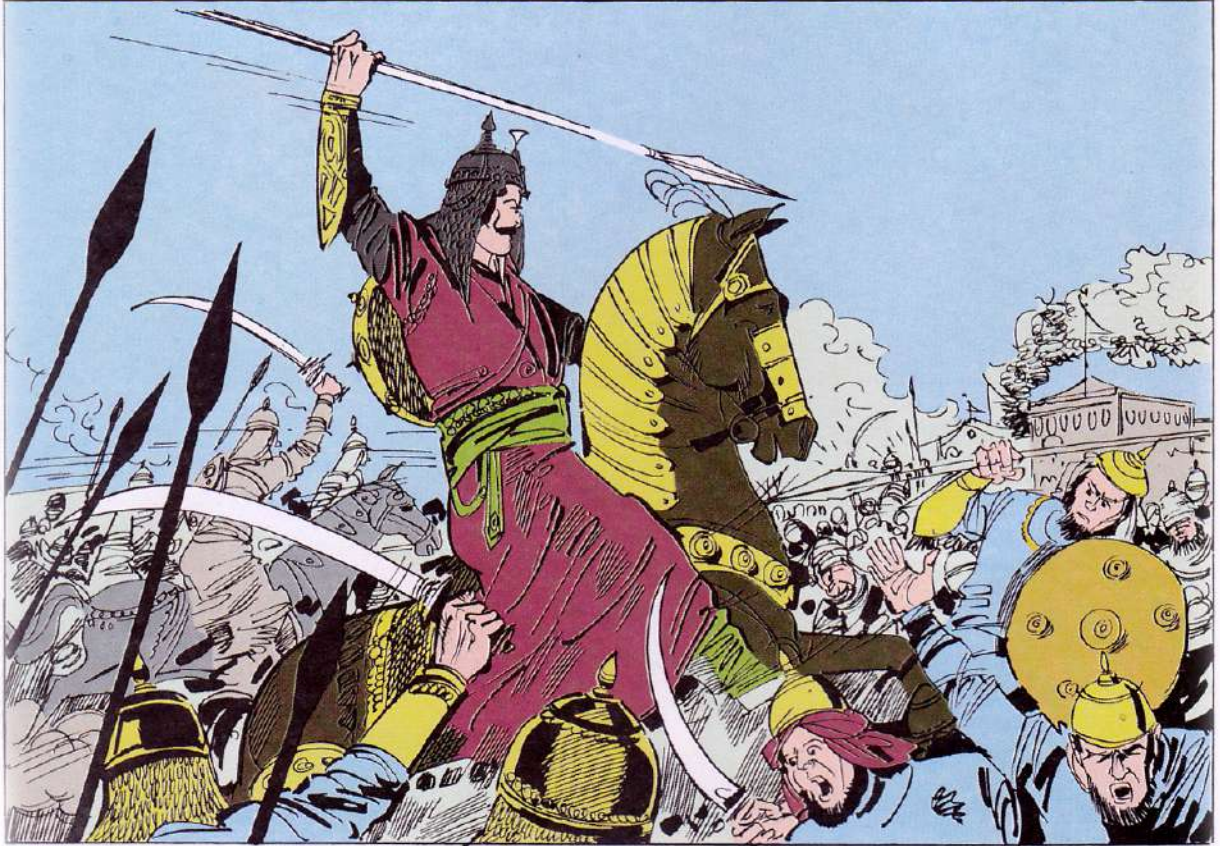
अकबर के दरबार में–
प्रताप ने हमारे सामने कोई विकल्प नहीं छोड़ा। उसे कुचलना ही होगा।
ठीक है - यही करो।
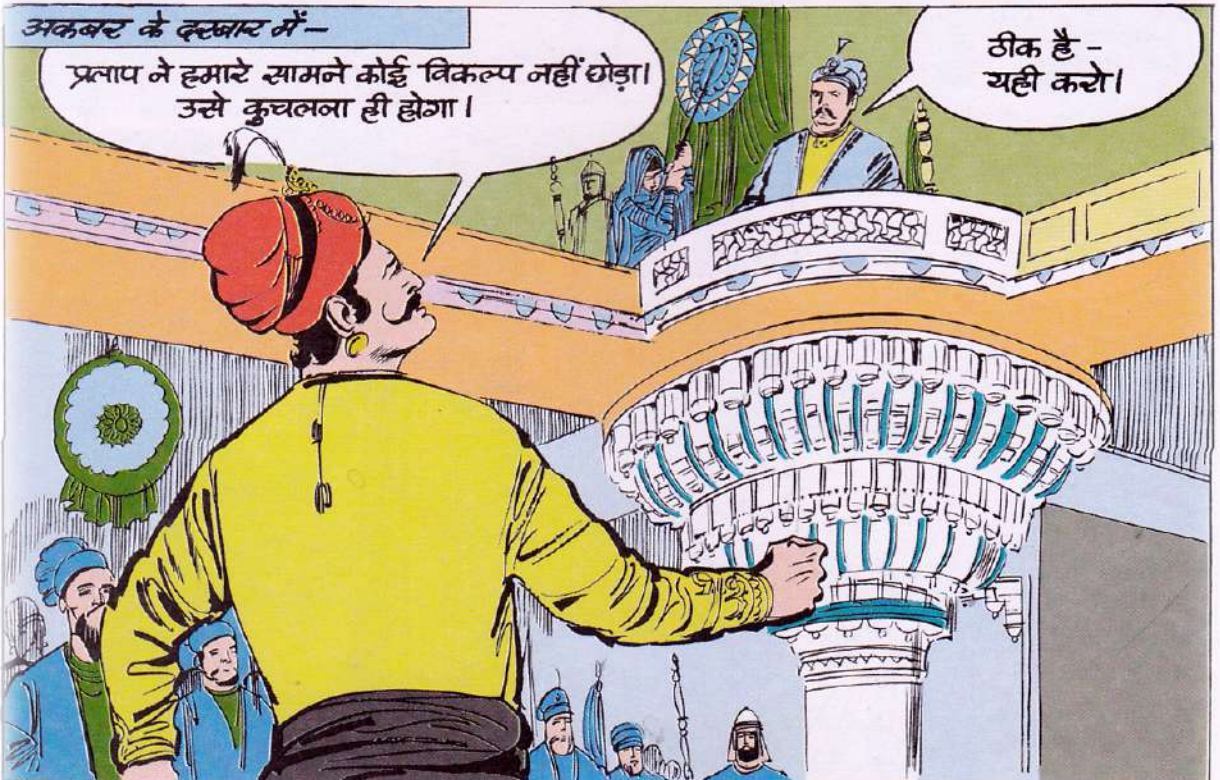
शीघ्र ही मान सिंह और शाहज़ादा सलीम विशाल सेना ले कर चल दिये।
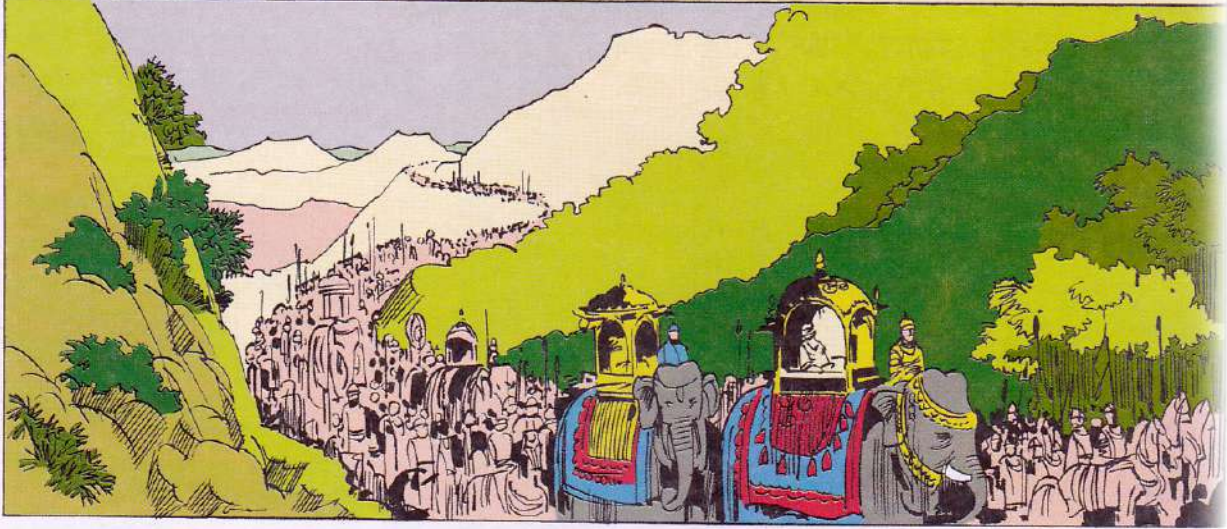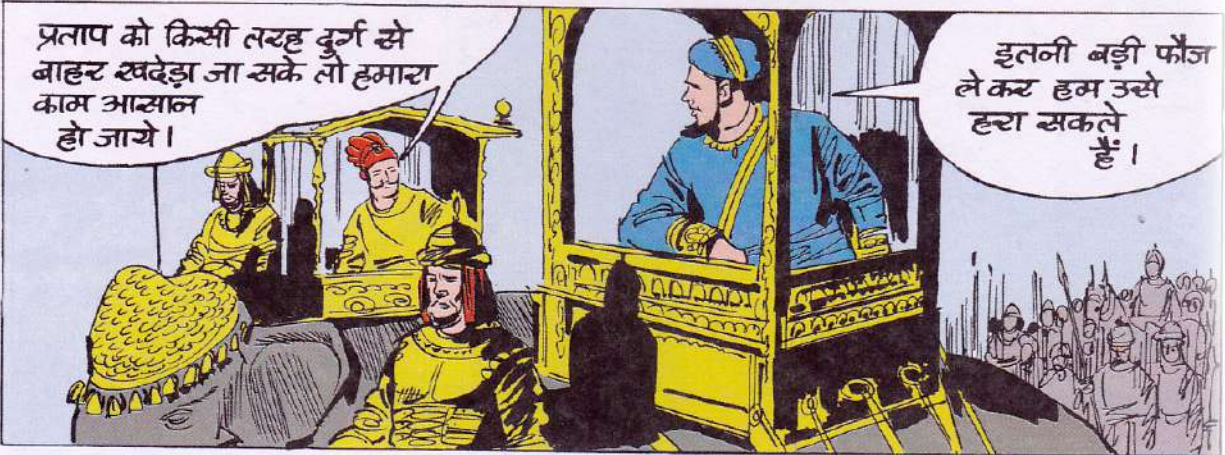
अकबर की सेनाएँ युध्द-स्थल हल्दी घाटी में आ पहुँची।

उधर प्रताप के दुर्ग में —

राणा जी, भेदिये समाचार लाये हैं कि शत्रु की सेना में ८०,००० सैनिक हैं जिनके पास अनेक तोपें और बन्दूकें हैं।

और हमारे पास केवल २२,००० सैनिक हैं — बन्दूकें हैं ही नहीं।

मान सिंह को भी महत्त्वपूर्ण सूचना मिली।
सेनापति मान सिंह, प्रताप के पास केवल २२,००० सैनिक हैं और बन्दूक एक भी नहीं।
बहुत अच्छा समाचार है।

न सैनिक हैं न शस्त्रास्त्र —फिर भी मुग़ल साम्राज्य से लोहा लेने चला है! प्रताप जरूर मूर्ख है।
मूर्ख नहीं, शूरवीर! वह सच्चा राजपूत है....

ज़ोम में मत रहो, शाहज़ादे। विशाल सेना और बढ़िया हथियार लड़ाई में काम अवश्य देते हैं। परन्तु युद्ध करने के लिये साहस से बढ़कर कोई चीज़ नहीं।
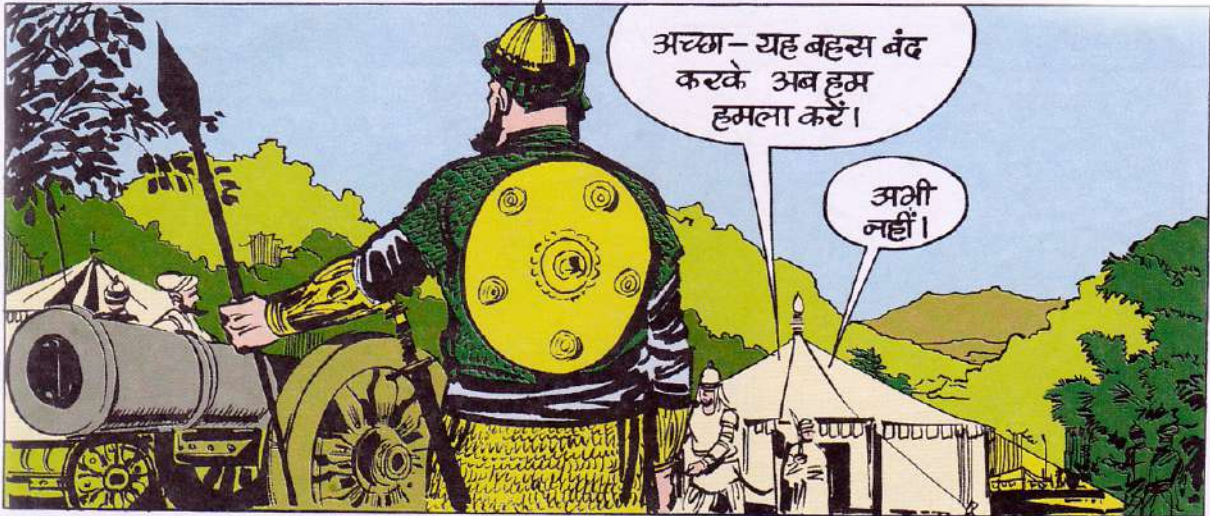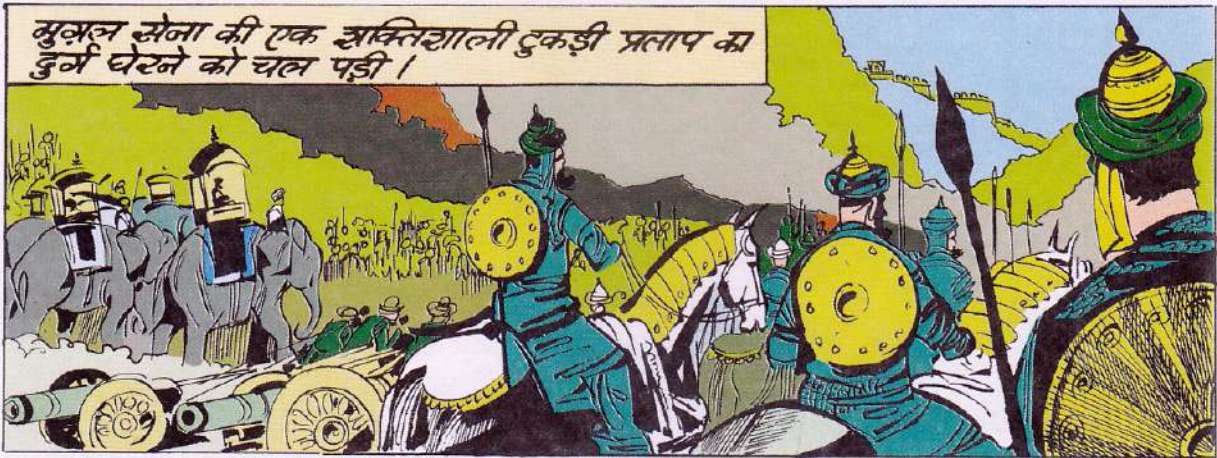
अच्छा– यह बहस बंद करके अब हम हमला करें।
अभी नहीं।

क्यों नहीं?
क्योंकि प्रताप के दुर्ग का रास्ता उस संकरी घाटी के अन्दर से है और....

.... प्रताप के सैनिक हमें फँसने के लिए उसमें जमे बैठे हैं। हमें प्रतीक्षा करनी होगी ताकि हमला करने में पहल वे करें।

लम्बी प्रतीक्षा के बाद –
हम यों कब तक ठहरे रहें! हमें फ़ौरन हमला करना चाहिए।
नहीं, शाहज़ादा सलीम!
हुज़ूर, मैंने प्रताप के क़िले का एक लम्बा लेकिन आसान रास्ता ढूँढ लिया है।

शाबाश। पर्याप्त सैनिक ले कर दुर्ग पर पीछे से आक्रमण करो।
जो हुक्म।

मुग़ल सेना की एक शक्तिशाली टुकड़ी प्रताप का दुर्ग घेरने को चल पड़ी।

राणा प्रताप सेना की इस कार्रवाई का समाचार पा कर चिन्तित हो गये।
हमारे लिए दुर्ग से लड़ना ही उपयुक्त होता — परन्तु अब हल्दी घाटी में सामना करना होगा।

और फिर हल्दी घाटी के युद्ध-स्थल में —
आक्रमण करो!
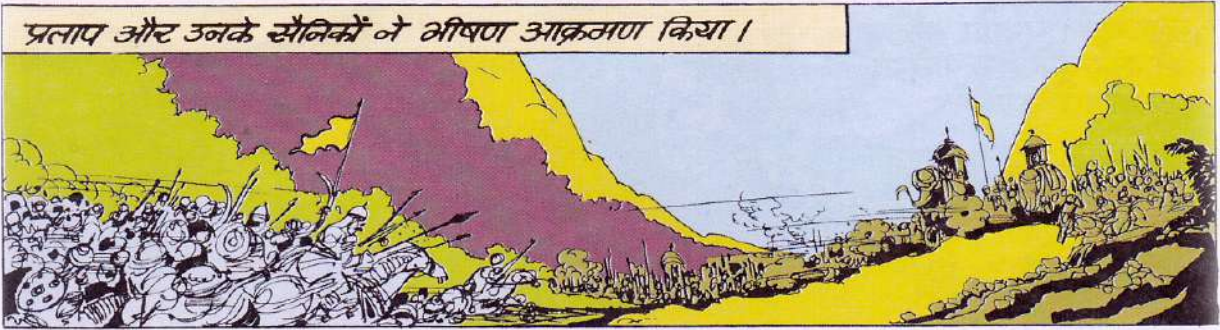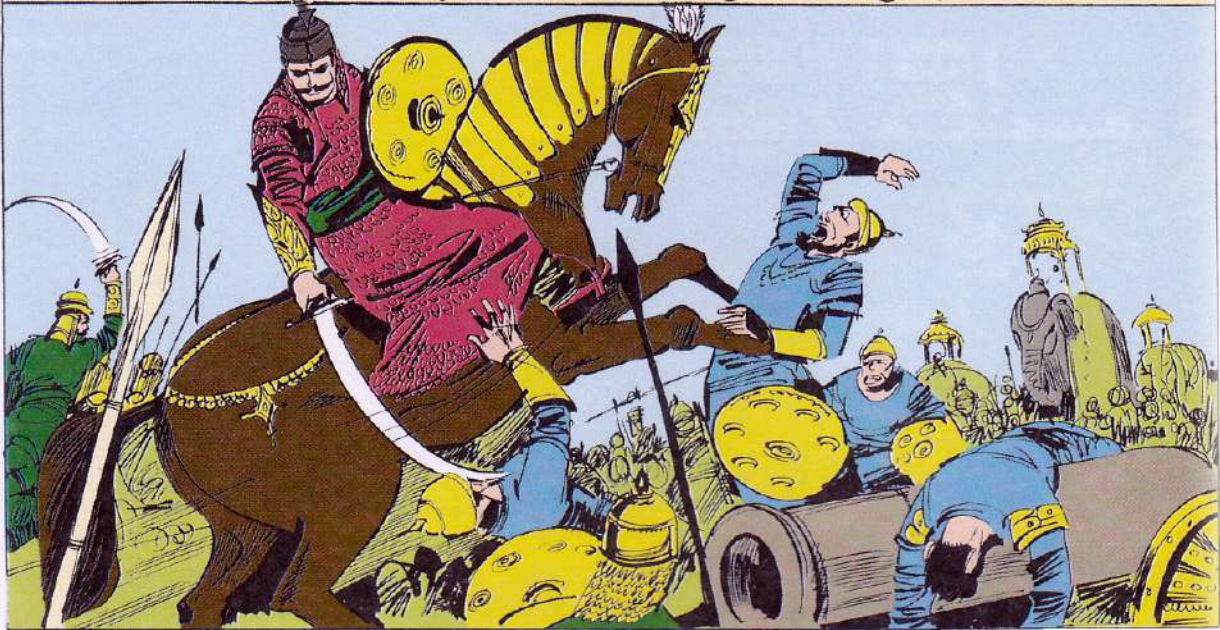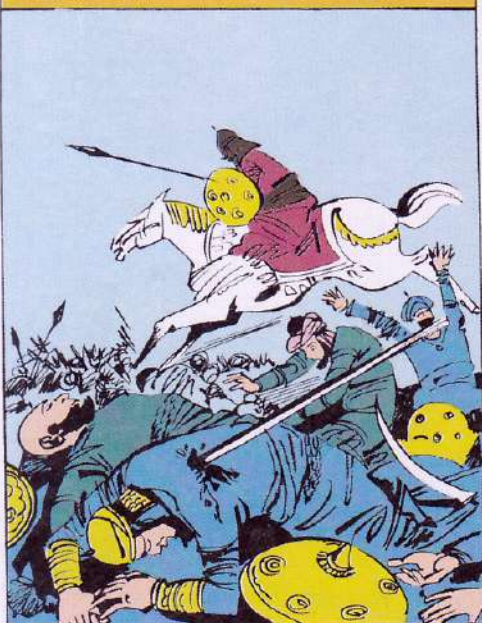
परन्तु मुग़ल सेना जैसे ही मैदान छोड़ने को थी कि और कुमुक आ पहुँची।
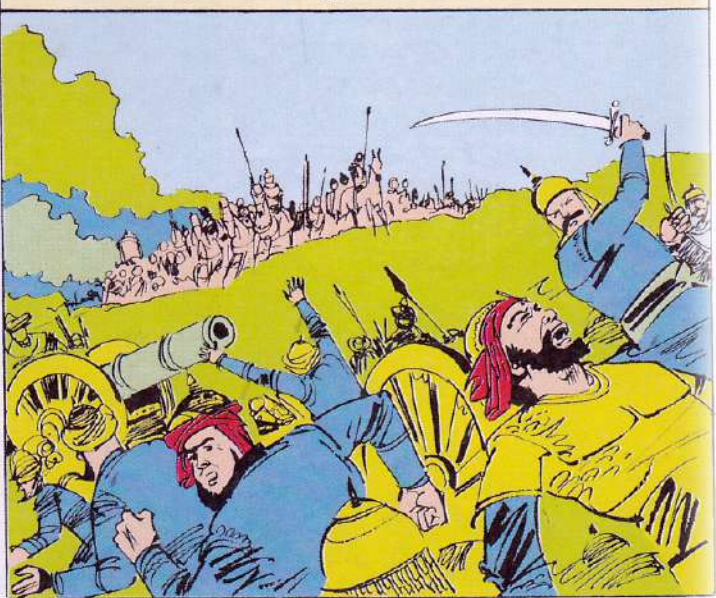
उसके बाद जो घमासान युद्ध हुआ उसमे राणा प्रताप के १५,००० सैनिक काम आ गये

युद्ध फिर भी चलता रहा।
मान सिंह बड़ा कुशल सेनापति है। उसे मार दिया जाये तो उसकी सेना का मनोबल टूट जायेगा।
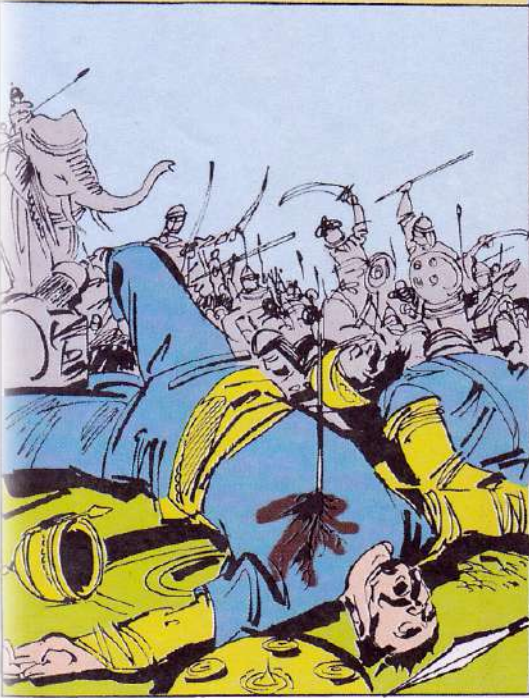
राणा प्रताप तुरन्त मान सिंह की ओर लपके।
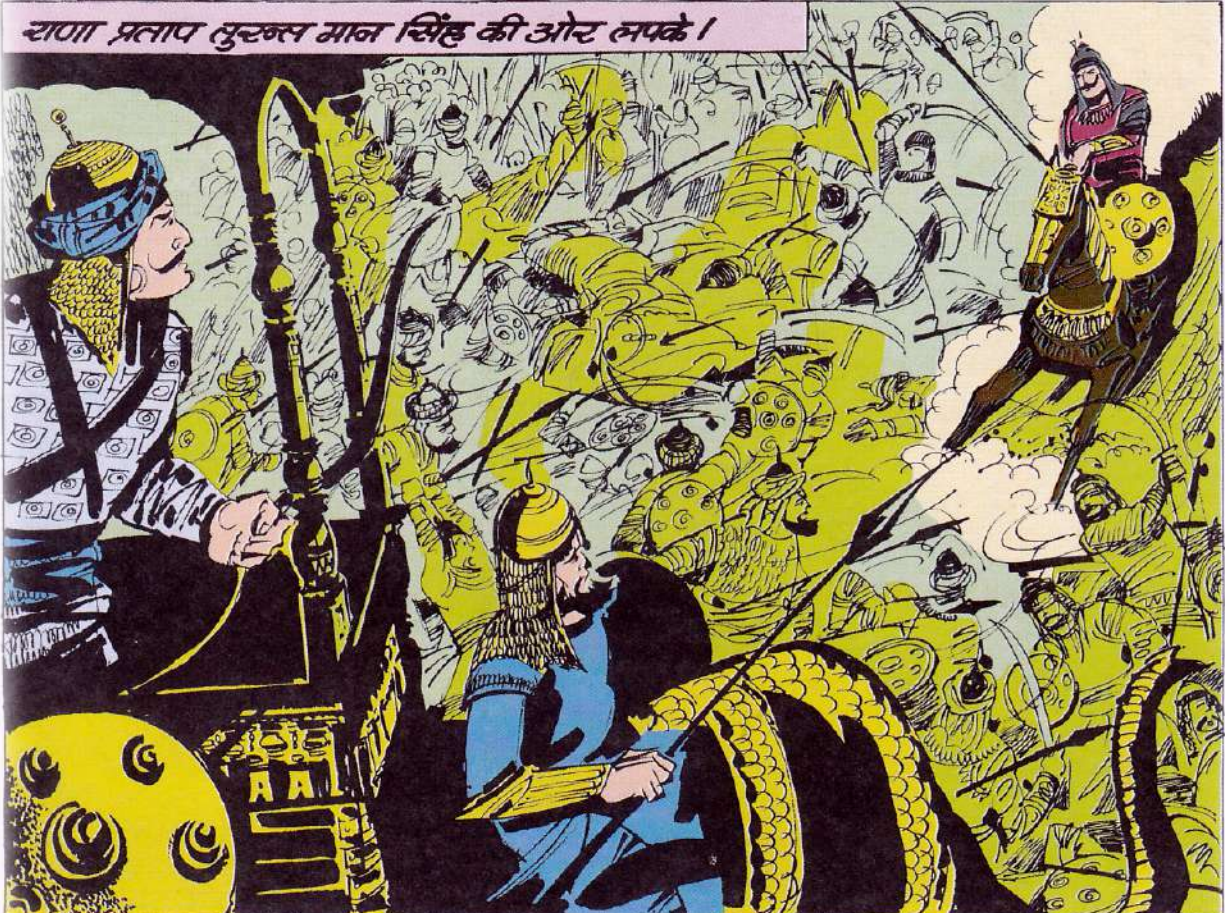
मान सिंह हाथी पर सवार थे। प्रताप क्रोधित सिंह की तरह उन पर टूट पड़े।
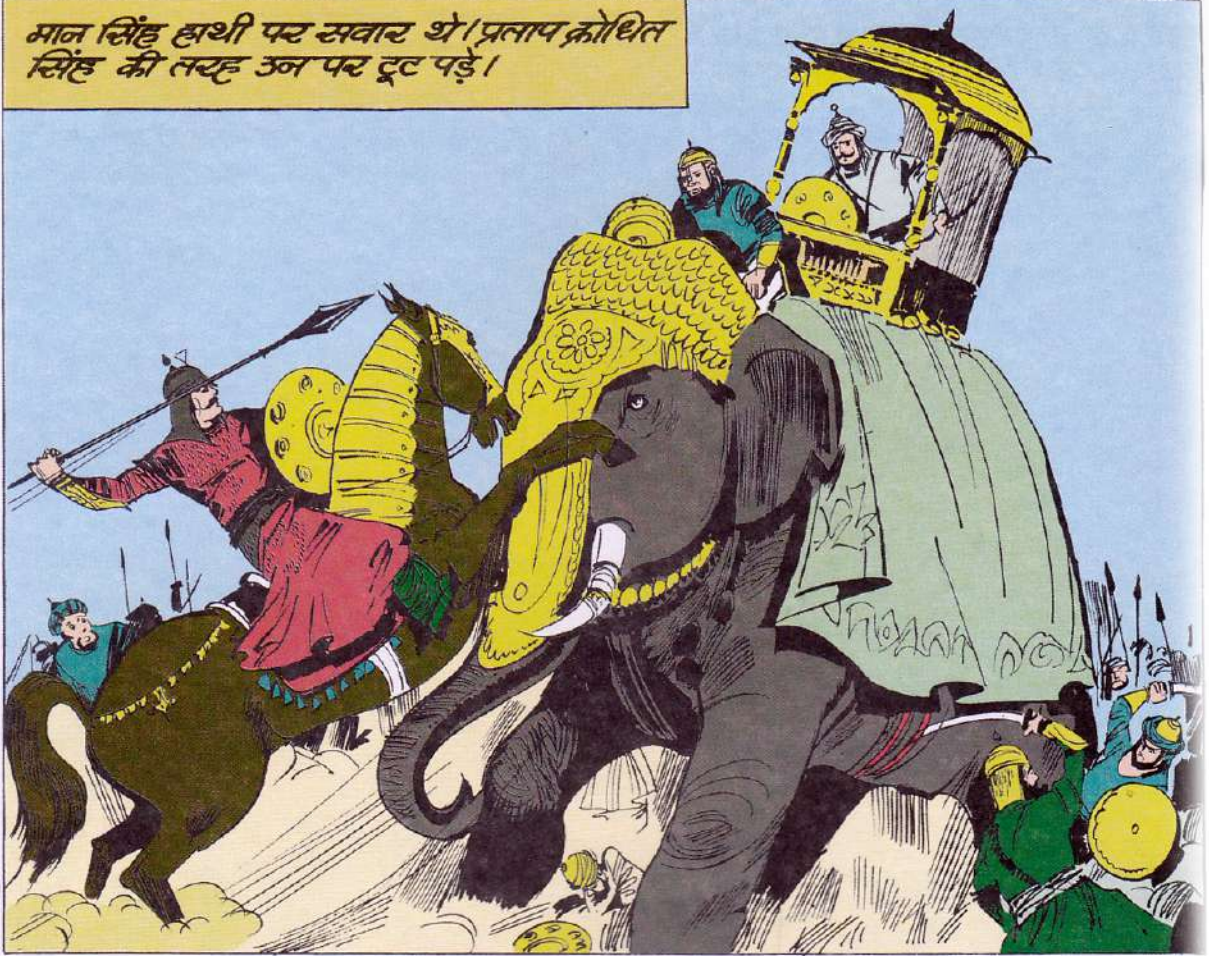
प्रताप ने भाला फेंक कर मारा किंतु वार खाली गया! मान सिंह बच गये।

इस बीच शत्रु के सैनिकों ने प्रताप को घेर लिया।
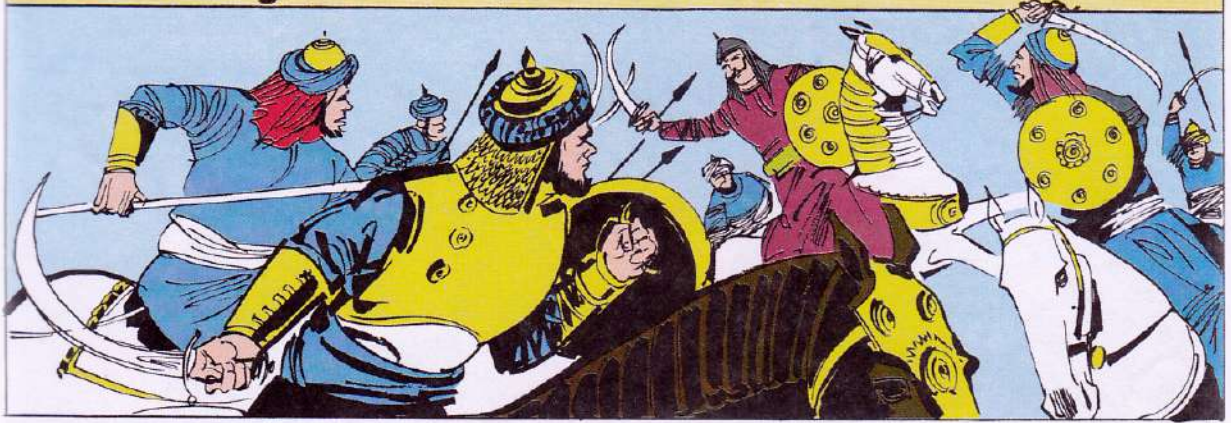
उन्हें खतरे में देखकर उनका मित्र, मन्ना तथा कुछ और सैनिक उनकी सहायता करने दौड़े।
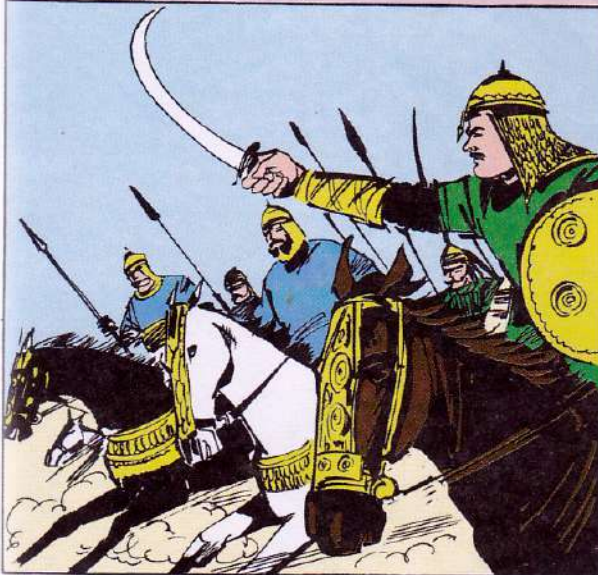
राणा प्रताप को बचाने के लिए उनका शिरस्त्राण मन्ना ने अपने सर पर धारण कर लिया।

मुग़ल सैनिक भुलावे में आ गये। उन्होंने प्रताप समझ कर मन्ना पर आक्रमण किया। मन्ना उनसे भिड़ गये और इस बीच स्वामी-भक्त घोड़ा, चेतक प्रताप को लेकर भाग निकला।
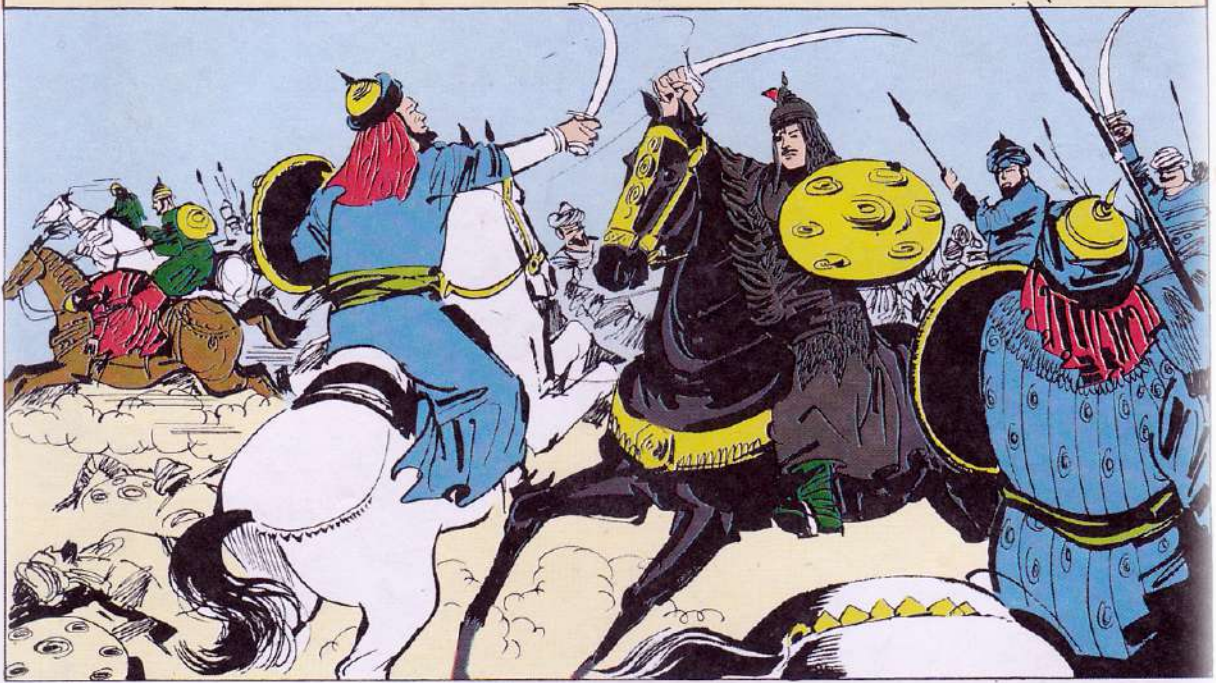
राणा बेहोश थे। उनकी रक्षा के लिए कुछ राजपूत सैनिक चेतक के साथ हो लिये।
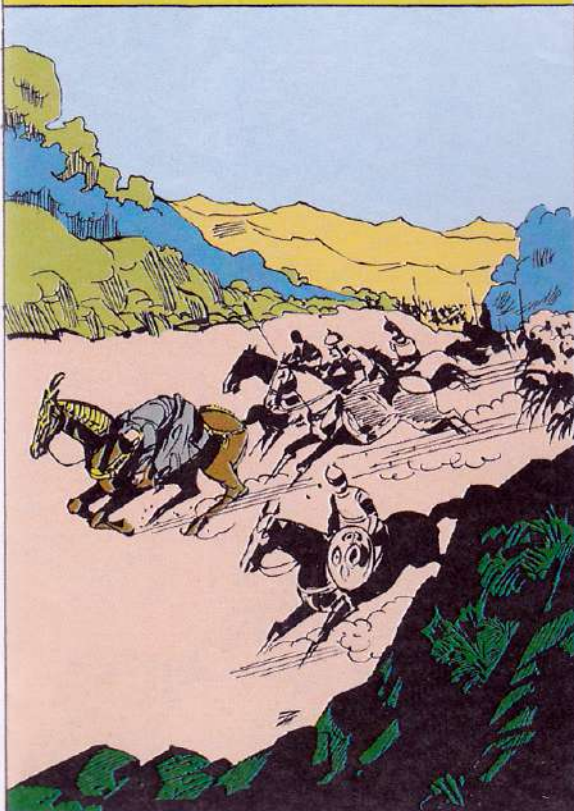
वे घायल प्रताप को जंगल की एक गुफा में ले गये।

प्रताप बच तो गये परन्तु उनके परिवार को बहुत बुरे दिन देखने पड़े। कई-कई दिन बीत जाते और उन्हें जंगली फल तथा कन्द-मूल के अतिरिक्त कुछ खाने को न मिलता।
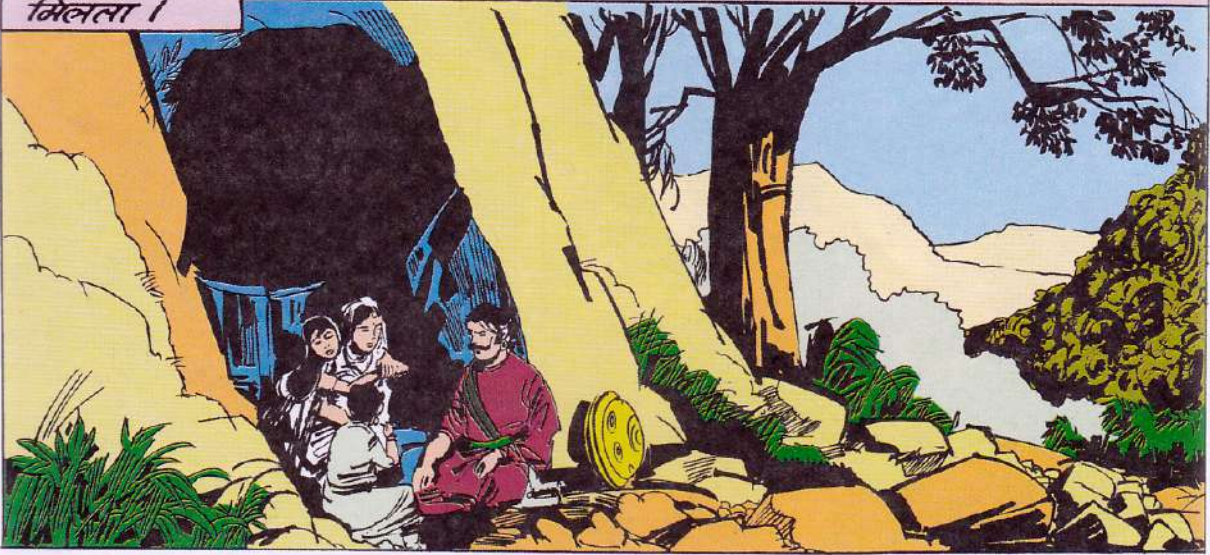
एक दिन प्रताप का पुत्र, अमर सूखी रोटी खा रहा था।

प्रताप की पुत्री ने अपनी रोटी भाई को दे दी थी। पर वह भूख से बेहोश हो गयी।

कुछ दिन बाद अकबर के दरबार में –

अकबर के दरबार में एक राजपूत कवि, पृथ्वीराज मन ही मन प्रताप का बहुत मान करता था। उसे यह बात सुहाई नहीं।
स्वतंत्रता की अन्तिम आशा भी नष्ट होने जा रही है। मुझे कुछ करना चाहिए।

कवि ने राणा प्रताप को पत्र लिखा।
॥ श्री ॥
केवल आप ही हैं जो राजपूतों की प्रतिष्ठा की रक्षा कर सकते हैं। जिस दिन सूर्य पश्चिम से उदय होगा उसी दिन आप अकबर को स्वामी कह सकते हैं।

कितने प्रेरक हैं ये शब्द! मैं पृथ्वीराज को लिखता हूँ कि सूर्य हमेशा पूर्व से ही उदय होता रहेगा। मैं कभी अकबर के सामने नहीं झुकूँगा।
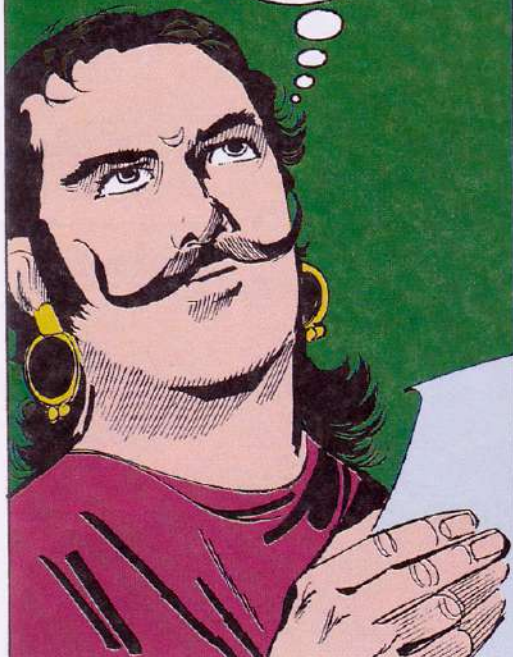
पृथ्वीराज के पत्र से बेख़बर अकबर ने सैनिकों का एक विशाल दल प्रताप को जंगल से लाने को भेजा।
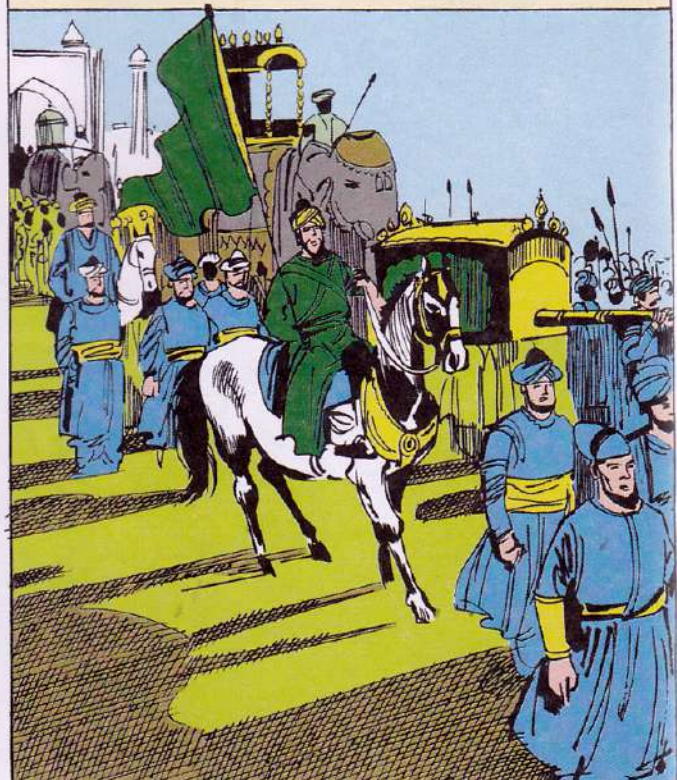
राणा प्रताप ने साथ चलने से इन्कार कर दिया तो सैनिकों ने उन पर धावा बोल दिया।

राजपूत सैनिक सब के सब वीरगति को प्राप्त हो गये और प्रताप गिरफ़्तार होने ही वाले थे कि अचानक भीलों ने मुग़लों पर हल्ला बोल दिया।

भील राणा प्रताप को सपरिवार अपने गाँव ले गये। प्रताप अपने सैनिकों के मारे जाने से बहुत दुखी थे।
सब समाप्त हो गया। मैं अपनी मातृभूमि को स्वाधीन नहीं करा सकूँगा।
हिम्मत मत हारिये, राणा जी। आप ही पर तो हमारी आशाएँ टिकी हैं।

परन्तु सेना के बिना मैं कैसे मुग़लों से लोहा लूँगा?
मैं जंगल से अपने क़बीले वालों को इकट्ठा करूँगा तब आप फिर युद्ध जारी रख सकेंगे।

परन्तु सेना को तैयार करने के लिए धन चाहिए। मेरे पास काली कौड़ी भी नहीं है।

एक दिन–
मैं तुम लोगों पर भार बनना नहीं चाहता। मैं यहाँ से चला जाऊँगा।
आप भार नहीं हैं, राणा जी!

तभी एक आदमी ख़बर लाया—
राणा जी, भामाशाह नाम के कोई सज्जन आप से मिलने आये हैं।
उन्हें यहीं ले आओ।

राणा जी, मैंने सुना है आपको धन की आवश्यकता है। मेरी सारी सम्पत्ति आप ही की है।
परन्तु आप की निजी सम्पत्ति मैं नहीं ले सकता।
भामा शाह चित्तौड़ के प्रसिद्ध व्यापारी थे।

देश पर संकट आया हुआ हो तो निजी कुछ नहीं रहता। अब तो सब कुछ देश का है।

उस विशाल धनराशि से प्रताप ने भीलों की शक्तिशाली सेना तैयार की।
अब हम फिर मुग़लों से लड़ने को तैयार हैं।
जय चण्डी! हर हर महादेव!

प्रताप ने भीलों की सेना ले कर कई लड़ाइयाँ जीतीं ।
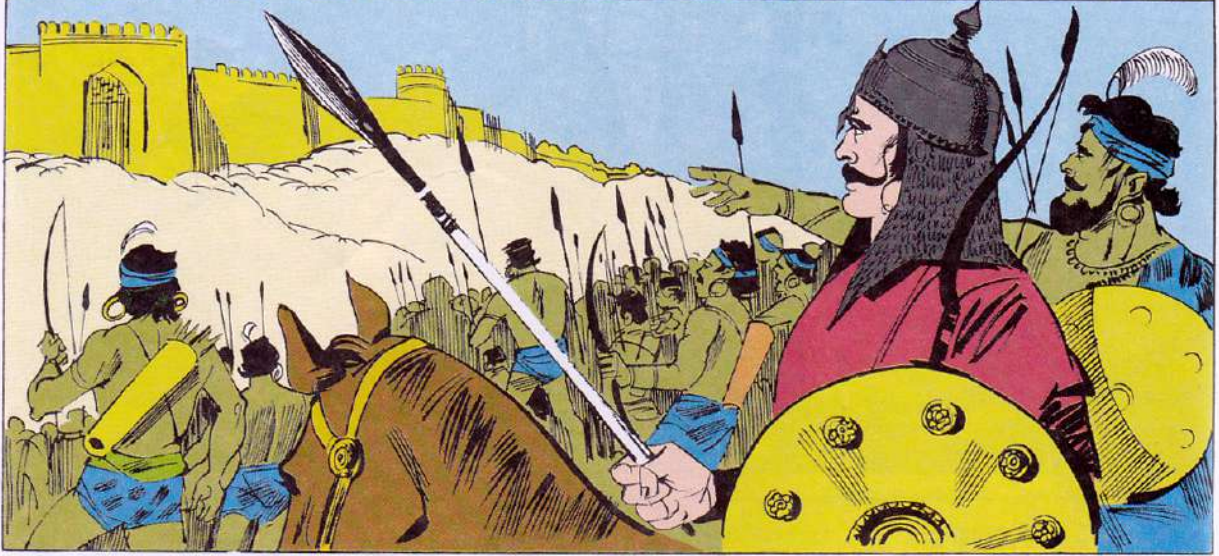
मुग़लों से फिनसहारा का क़िला फ़तह किया ।
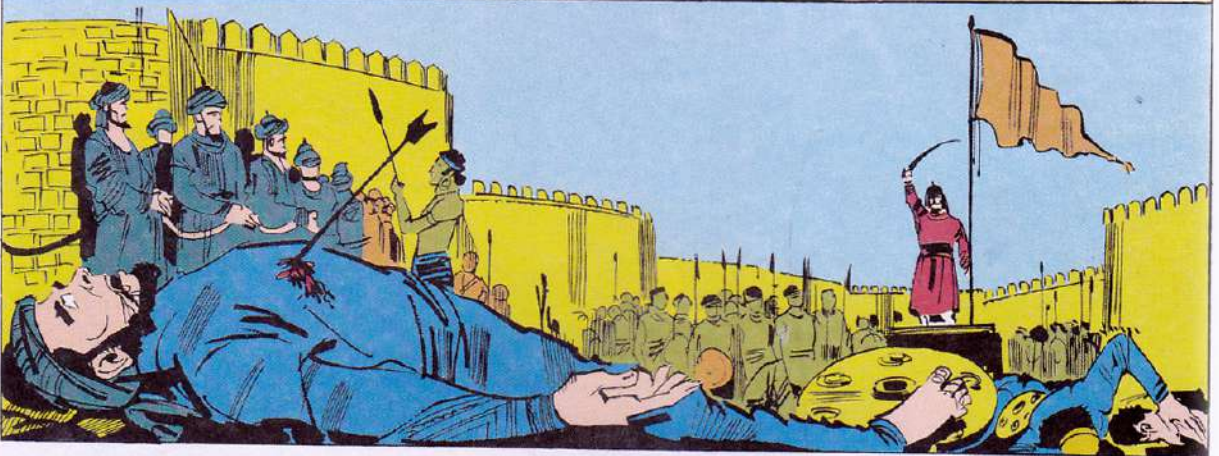
फिर प्रताप ने शीघ्रतापूर्वक आस-पास के क़िलों पर आक्रमण किये जो मुग़लों के अधीन थे।
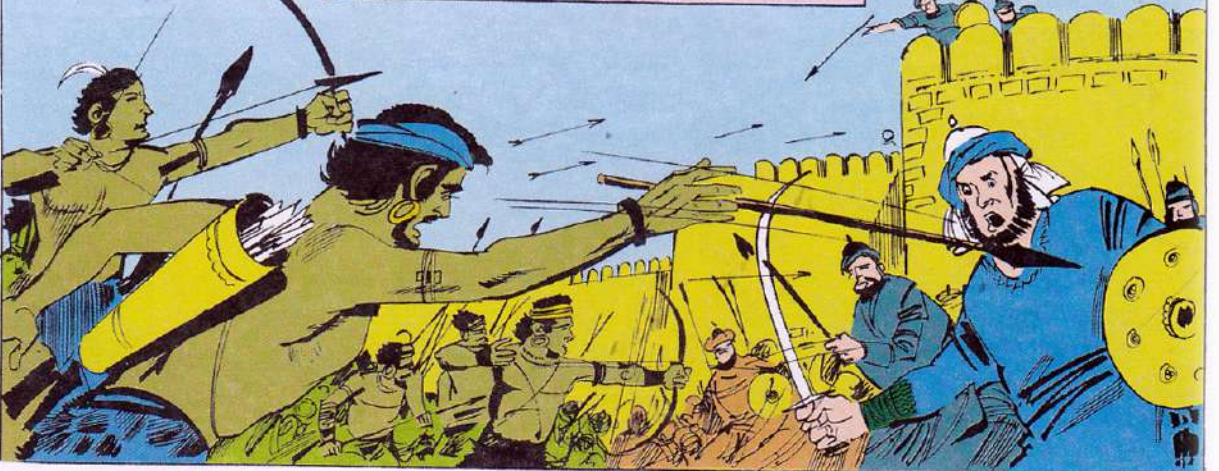
अन्त में राणा प्रताप ने देवर, उदयपुर और कोमलमीर के इलाक़ों को मुक्त कर लिया।

परन्तु चित्तौड़ अब भी मुग़लों के अधिकार में था। प्रताप बीस वर्षों से लगातार वीरतापूर्वक लड़ते आ रहे थे। अब वे गंभीर रूप से बीमार थे।
आप जल्दी ही स्वस्थ हो जायेंगे, राणा जी।
नहीं, मुझे लगता है मेरा अन्त समय आ गया है।

मैं कैसा अभागा हूँ कि अपनी मातृभूमि चित्तौड़ को स्वाधीन नहीं करा सका!

राणा प्रताप स्वतंत्रता का अधूरा सपना लिये हुए ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। जीवन के अन्तिम दिन तक वे अपने प्रण का पालन करते रहे। बीमारी की हालत में भी वे नरम शैया पर नहीं सोये। उन्होंने भूमिपर ही शयन किया। इस प्रकार वे भावी पीढ़ी के नेताओं के लिए आदर्श स्थापित कर गये कि जब देश संकट-ग्रस्त हो तो किसी को ऐश-आराम का जीवन बिताने का अधिकार नहीं है।

राणा प्रताप

जीवन के सुख त्याग कर वीर राणा प्रताप अकेले ही बलशाली मुगल शासकों से आजीवन संघर्ष करते रहे। शत्रु भी उनकी राजपूती आन - बान का सम्मान करते थे। वे जान चुके थे कि विशाल सेना और आधुनिक शस्त्र युद्ध में तो सहयोग कर सकते हैं परंतु रणभूमि में दिखलाई गई वीरता का कोई अनुकल्प नहीं है।

ISBN 978-81-8482-329-5